स्वतंत्रता दिवस

शनिवार, 15 अगस्त 2026

स्थान: परमाणु ऊर्जा विभाग सचिवालय

संबोधन

डॉ. ए. के. मोहान्ती

अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग एवं सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग

प्रिय साथियो, देवियो एवं सज्जनो,

सुप्रभात, आप सभी का हार्दिक स्वागत है। आज जब हम अपने महान राष्ट्र का 80वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहे है। इस अवसर पर मैं सभी गौरवशाली स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करता हूँ, इनमें से अनेक के नाम तो भारतीय स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में दर्ज तक नहीं हैं, इनकी कोई व्यक्तिगत पहचान नहीं है लेकिन ये वे लोग थे जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे कर हमें विदेशी शासन की बेड़ियों एवं दासता से मुक्ति दिलाई है। इस अवसर पर मैं स्वतंत्र भारत के उन नागरिकों को भी सलाम करना चाहूँगा, जिन्होंने राष्ट्र-निर्माण के लिए अथक परिश्रम किया है और आज भी निरंतर कर रहे हैं।

जैसा कि आप जानते हैं, परमाणु ऊर्जा विभाग भी अपनी स्थापना के समय से ही राष्ट्र-निर्माण के इस अभियान का अंग रहा है। इस अभियान में अपनी-अपनी भूमिकाओं एवं क्षमताओं के अनुसार आपके योगदान के लिए मैं आप सभी को बधाई देना चाहता हूँ।

मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि विगत एक वर्ष कई दृष्टियों से विभाग के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष रहा है। पिछले वर्ष मैंने उल्लेख किया था कि 21वीं शताब्दी का पहला चतुर्थांश विभाग के लिए 'अन्वेषण, अनुभूति और सुधार' (revelation-realization-reforms) का समय रहा है। उसी ऊर्जा एवं उत्साह के साथ आगे बढ़ते हुए विभाग के प्रयास कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियों में परिणत हुए हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि नाभिकीय ऊर्जा को बढ़ावा देने तथा उसके त्वरित परिनियोजन के उद्देश्य से संसद ने दिसंबर 2025 में **'भारत के रूपांतरण के लिए नाभिकीय ऊर्जा का सतत संधारणीय दोहन और अभिवर्धन (शांति) अधिनियम, 2025'** को अधिनियमित किया है। यह एक व्यापक नया विधान है, जो देश के कुल ऊर्जा मिश्रण में नाभिकीय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़ाने, नाभिकीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में नवाचार को सुगम बनाने, गैर-विद्युत क्षेत्रों में इसके अनुप्रयोगों का विस्तार करने तथा संरक्षा, सुरक्षा, सुरक्षोपायों (safeguards) एवं नाभिकीय दायित्व के संबंध में भारत की प्रतिबद्धताओं का निर्वहन निरंतर बनाए रखने के उद्देश्यों के अनुरूप है। यह ऐतिहासिक विधान एक सुरक्षित एवं सतत ऊर्जा भविष्य के निर्माण की दिशा में देश की व्यापक यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। अन्य उपायों के साथ-साथ यह नाभिकीय ऊर्जा तथा आयनकारी विकिरण के शांतिपूर्ण उपयोग में निजी क्षेत्र की भागीदारी हेतु सक्षमकारी प्रावधान भी करता है।

यह युगांतरकारी सुधार भारत में स्वच्छ ऊर्जा उत्पादन के एक नए युग का सूत्रपात करेगा।

प्रिय साथियो,

इन्हीं बड़ी अपेक्षाओं के साथ, अब मैं विगत एक वर्ष की हमारी उल्लेखनीय उपलब्धियों का विवरण आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहूँगा।

A. **नाभिकीय विद्युत उत्पादन** विभाग का प्रमुख कार्यक्रम है और इस क्षेत्र में हमारी आत्मनिर्भरता का आधार-स्तंभ रहा है। जो सुधार हो चुके हैं, उन्हें अब इस कार्यक्रम के रूपांतरण के माध्यम से कहीं अधिक व्यापक एवं दृढ़ संकल्पित दृष्टिकोण के साथ मिशन-मोड में कार्यान्वित किया जाना है, ताकि यह अपनी संपूर्ण क्षमता तक फलीभूत हो सके। **मैं अपनी बात नाभिकीय विद्युत कार्यक्रम की प्रगति से आरंभ करूँगा, जिसमें एएमडीईआर, यूसीआईएल, एनएफसी, एचडब्ल्यूबी, ईसीआईएल, एनपीसीआईएल, भाविनी, बीएआरसी तथा आईजीकार की महत्वपूर्ण भूमिका निरंतर बनी हुई है और आने वाले दिनों में यह भूमिका और अधिक सघन तथा व्यापक होने जा रही है। मैं कुछ ऐसी उपलब्धियों को रेखांकित करूँगा, जिन्हें नाभिकीय विद्युत में आत्मनिर्भरता की हमारी यात्रा के महत्वपूर्ण मील के पत्थर के रूप में देखा जा सकता है।**

1. आईजीकार द्वारा स्वदेशी अभिकल्पित तथा भाविनी द्वारा निर्मित एवं कमीशनित प्रोटोटाइप फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (PFBR, 500 MWe) ने दिनांक 06 अप्रैल 2026 को प्रथम क्रांतिकता प्राप्त की। वर्तमान में निम्न-शक्ति भौतिकी प्रयोग प्रगति पर है।

2. PFBR की प्रथम क्रांतिकता जहाँ हमारे मुकुट का रत्न है, वहीं विगत एक वर्ष में नाभिकीय ऊर्जा के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व की कई बड़ी परियोजनाएँ भी पूर्ण हुई हैं:

   a. माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 25 सितंबर, 2025 को राजस्थान में माही बाँसवाड़ा राजस्थान परमाणु विद्युत परियोजना (MBRAPP) की आधारशिला रखी, जिसे 700 MWe की चार PHWR इकाइयों हेतु 'अश्विनी' जो एनपीसीआईएल और एनटीपीसी का संयुक्त उद्यम है द्वारा कार्यान्वित किया जाएगा। प्रथम दो इकाइयों के लिए एईआरबी द्वारा उत्खनन हेतु सहमति 18 मार्च 2026 को प्रदान की जा चुकी है।

   b. BWR प्रौद्योगिकी पर आधारित भारत के प्रथम नाभिकीय विद्युत रिएक्टर टीएपीएस-1 एवं 2 को जीवनकाल प्रबंधन तथा उन्नयन कार्य के पश्चात पुनः प्रारंभ कर दिया गया है। ये विश्व के सबसे पुराने प्रचालनरत वाणिज्यिक नाभिकीय रिएक्टर बन गए हैं, जिन्होंने वर्ष 1969 में वाणिज्यिक प्रचालन आरंभ किया था और आज भी विद्युत उत्पादन कर रहे हैं।

   c. एईआरबी से सांविधिक एवं विनियामक अनुमतियाँ प्राप्त होने के पश्चात कैगा विद्युत उत्पादन केंद्र की इकाई 5 एवं 6 का निर्माण 1 मार्च, 2026 को प्रथम कंक्रीट ढलाई के साथ आरंभ हो गया।

d. नव-कमीशनित इकाई आरएपीपी-7 ने 700 MW का रेटेड पावर स्तर प्रचालन दिनांक 10 फरवरी, 2026 को प्राप्त कर लिया है।

3. एनपीसीआईएल ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान कुल 55,190 मिलियन यूनिट विद्युत का उत्पादन किया। साथ ही, एनपीसीआईएल ने वित्त वर्ष 2025-26 में ₹18,793 करोड़ का अब तक का सर्वाधिक पूँजीगत व्यय (CAPEX) दर्ज किया। भारत ने सुरक्षित प्रचालन के 660 से अधिक रिएक्टर-वर्षों का अनुभव अर्जित कर लिया है।

4. एएमडी ने यूरेनियम, थोरियम एवं विरल मृदा निक्षेपों की वृद्धि की दिशा में अपने प्रयास जारी रखे हैं। आज की तारीख में, देश में निर्धारित यूरेनियम संसाधन (U3O8) कुल चार लाख तैंतालीस हजार टन हैं, जिसमें पिछले एक वर्ष में 9,000 टन की वृद्धि हुई है ।

5. यूसीआईएल ने ग्रीनफील्ड यूरेनियम खनन परियोजनाओं की स्थापना तथा अपनी विद्यमान इकाइयों के विस्तार में तेजी लाने हेतु कई पहल की हैं, जिनमें मोसाबनी यूरेनियम पुनर्प्राप्ति संयंत्र को पुनः प्रारंभ करने तथा रोहिल यूरेनियम परियोजना में अन्वेषी खनन हेतु भूमिगत ढलान (डिक्लाइन) के विकास संबंधी कदम उठाना सम्मिलित हैं।

6. एनएफसी ने 700 MWe पीएचडब्ल्यूआर हेतु ईंधन उत्पादन के लिए रावतभाटा में अपनी ग्रीनफील्ड परियोजना "एनएफसी कोटा" को पूरा कर लिया है। यह आईएईए सुरक्षोपायों के अंतर्गत 700 मेगावाट पीएचडब्ल्यूआर संयंत्रों के लिए

ईंधन का विशेष रूप से उत्पादन करेगी। एनएफसी ने अपनी स्थापना के बाद से देश के विभिन्न प्रचालनरत रिएक्टरों को पीएचडब्ल्यूआर ईंधन का अब तक का सर्वाधिक प्रेषण तथा वित्त वर्ष 2025-26 में 700 मेगावाट पीएचडब्ल्यूआर हेतु स्टीम जनरेटर ट्यूबों के विनिर्माण का भी अब तक का सर्वाधिक उत्पादन दर्ज किया है।

7. हमारे परमाणु विद्युत कार्यक्रम के द्वितीय चरण से संबंधित अन्य उल्लेखनीय उपलब्धियों में निम्नलिखित का विशेष उल्लेख आवश्यक है:

   a. एचडब्ल्यूबी ने ^{10}B समृद्ध B_4C पेलेट तथा नाभिकीय श्रेणी के सोडियम का सफलतापूर्वक उत्पादन एवं आपूर्ति की है, जिसे परीक्षण हेतु FBTR एवं PFBR को उपलब्ध कराया गया है ।

   b. आईजीकार स्थित फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर अभियान-मोड में निरंतर विद्युत उत्पादन कर रहा है तथा वर्ष 1985 में अपनी प्रथम क्रांतिकता के पश्चात से 34 किरणन अभियान पूर्ण कर चुका है।

B. **स्वास्थ्य देखभाल के क्षेत्र में, जो विभाग का अन्य प्रमुख कार्यक्रम है, हम कैंसर के किफायती उपचार तथा रेडियो-फार्मास्युटिकल्स के स्वदेशी विकास, व्यावसायीकरण एवं आपूर्ति में निरंतर योगदान दे रहे हैं। इस अभियान में टीएमसी, ब्रिट, वीईसीसी, बीएआरसी तथा आईजीकार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।**

1. टाटा स्मारक केंद्र (टीएमसी) के अंतर्गत विभाग के 8 अस्पताल तथा 370 से अधिक अस्पतालों एवं अन्य सहयोगी संस्थानों को समाहित करने वाला राष्ट्रीय कैंसर ग्रिड नेटवर्क, कैंसर के किफायती उपचार, स्वदेशी अनुसंधान, नाभिकीय चिकित्सा तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को आगे बढ़ाने में सहायक हैं, जिसमें "Rays of Hope" (आशा की किरण) पहल के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के साथ भागीदारी भी सम्मिलित है। इस प्रकार सभी के लिए किफायती, न्यायसंगत एवं गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल की व्यापक पहुँच के अधिदेश का निर्वहन किया जा रहा है।

2. भारत की 'पड़ोसी प्रथम' नीति के एक उज्ज्वल उदाहरण के रूप में, टाटा स्मारक केंद्र (टीएमसी) ने बिम्सटेक सहयोग ढाँचे के अंतर्गत बांग्लादेश, भूटान, नेपाल तथा म्यांमार के स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए कैंसर के उपचार पर विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम को आयोजित किया।

3. BRICS 2026 के दौरान भारत की अध्यक्षता में, टाटा स्मारक केंद्र ने नाभिकीय चिकित्सा से जुड़े विनियामक विषयों पर BRICS सदस्य देशों के बीच विचार-विमर्श का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया, जिससे संरक्षित एवं प्रभावी रेडियोफार्मास्युटिकल्स तक पहुँच बढ़ाने तथा ब्रिक्स देशों में थेरानोस्टिक्स की प्रगति को सहारा देने के लिए अंतरराष्ट्रीय विनियामक सहयोग सुदृढ़ हुआ।

4. टाटा स्मारक केंद्र (टीएमसी) ने बक्कल म्यूकोसा कैंसर, जो तंबाकू चबाने से जुड़ा मुख कैंसर का एक सामान्य रूप है, पर भारत का सबसे बड़ा जीनोम-व्यापी

आनुवंशिक अध्ययन किया। 4,400 से अधिक व्यक्तियों के डीएनए का विश्लेषण करते हुए इस अध्ययन ने तंबाकू सेवन के साथ आनुवंशिक संवेदनशीलता के संयोजन को रेखांकित किया।

5. होमी भाभा कैंसर अस्पताल एवं अनुसंधान केंद्र (HBCH&RC), विशाखापत्तनम ने एक दुर्लभ एवं तीव्र गति से बढ़ने वाले बाल मस्तिष्क ट्यूमर के लिए भारत का प्रथम टेंडम ऑटोलॉगस स्टेम सेल प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक करके एक ऐतिहासिक उपलब्धि अर्जित की। यह प्रक्रिया मल्टी-लेयर्ड रोज़ेट्स युक्त एम्ब्रियोनल ट्यूमर (ETMR) से ग्रस्त तीन वर्ष के बालक पर की गई। उच्च तीव्रता वाले इस उपचार के पश्चात बालक सफलतापूर्वक स्वस्थ हुआ और स्थिर अवस्था में उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

6. टाटा स्मारक केंद्र ने ओडिशा सरकार के साथ भागीदारी करते हुए तकनीकी विशेषज्ञता एवं कार्यबल प्रशिक्षण उपलब्ध कराकर राज्य की जनसंख्या-आधारित कैंसर रजिस्ट्री की स्थापना की। सभी 30 जिलों के 150 से अधिक स्वास्थ्य पेशेवरों को कैंसर पंजीकरण, कोडिंग, आँकड़ा प्रबंधन एवं अनुवर्ती कार्रवाई का प्रशिक्षण दिया गया। इस पहल से विश्वसनीय कैंसर आँकड़े तैयार हो सकेंगे, जो रोग नियंत्रण में सुधार हेतु साक्ष्य-आधारित नियोजन एवं नीतिगत निर्णयों में सहायक होंगे।

7. आईजीकार ने पहली बार आयात-विकल्प के रूप में फॉस्फोरस-32 (पी-32) रेडियोआइसोटोप का सफलतापूर्वक उत्पादन किया है, जिसका गुणवत्ता परीक्षण अब ब्रिट में चल रहा है।

8. एचडब्ल्यूबी ने 97% आइसोटोप शुद्धता वाले H_2O^{18} का सफलतापूर्वक उत्पादन किया है तथा आरएमसी, मुंबई द्वारा इस उत्पाद को पीईटी स्कैनिंग हेतु साइक्लोट्रॉन में उपयोग के लिए उपयुक्त प्रमाणित किया गया है। इस उत्पाद जल को रेडियो फार्मास्युटिकल समिति (आरपीसी) से भी अनुमति प्राप्त हुई है, जिसने इसे चिकित्सा उत्पाद/निवेश सामग्री के रूप में बाजार हेतु उपयुक्त तथा अभिप्रेत अनुप्रयोग के लिए स्वीकार्य कर प्रमाणित किया है।

C. नाभिकीय विद्युत एवं विकिरण चिकित्सा से आगे, विभाग प्रगत पदार्थ, विकिरण-आधारित प्रौद्योगिकियों सहित प्रौद्योगिकियों और उत्पादों के क्षेत्र में अग्रणी अनुसंधान, विकास एवं अनुप्रयोग निरंतर जारी रखे हुए है। विभाग की अनेक इकाइयों द्वारा व्यापक गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं, जिनमें हाइड्रोजन उत्पादन, उच्च-स्तरीय त्वरक, लेजर, प्लाज्मा, अंतरिक्ष अनुप्रयोग, विरल मृदा तथा खाद्य सुरक्षा एवं अपशिष्ट उपचार के लिए विकिरण प्रौद्योगिकियाँ शामिल हैं। विभाग न केवल अपनी राष्ट्रीय प्रतिबद्धताएँ पूरी कर रहा है, बल्कि "वसुधैव कुटुम्बकम्", अर्थात् संपूर्ण विश्व एक परिवार है, की सच्ची भावना के साथ इनका विस्तार अन्य देशों तक भी कर रहा है।

1. एशिया-प्रशांत देशों के लिए आईएईए के क्षेत्रीय सहयोग करार के तहत, वर्ष 2026 में भारत की अध्यक्षता में आयोजित 48वीं राष्ट्रीय प्रतिनिधि बैठक के भाग के रूप में विभाग ने 18 से अधिक देशों के प्रतिनिधियों की मेजबानी की और एक तकनीकी बैठक तथा प्रदर्शनी आयोजित की, जिसमें नाभिकीय चिकित्सा के अतिरिक्त खाद्य एवं कृषि, जल तथा पर्यावरण के क्षेत्र में विभाग की विकिरण प्रौद्योगिकी आधारित सामाजिक प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया गया।

2. **हाइड्रोजन उत्पादन:** राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्यों के अनुरूप, विभाग स्वच्छ हाइड्रोजन उत्पादन की कई प्रौद्योगिकियों पर कार्य कर रहा है, जिसका अंतिम लक्ष्य ऐसी प्रणालियों को नाभिकीय विद्युत संयंत्रों से जोड़ते हुए नाभिकीय संयंत्रों से निकलने वाली अपशिष्ट ऊष्मा के उपयोग से सह-उत्पादन विधि द्वारा हाइड्रोजन का उत्पादन करना है। इस दिशा में:

   भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र द्वारा अभियंत्रित कॉपर-क्लोरीन (Cu-Cl) थर्मो-केमिकल प्रक्रिया-आधारित हाइड्रोजन उत्पादन प्रणाली को फास्ट ब्रीडर टेस्ट रिएक्टर के साथ एकीकृत कर सफलतापूर्वक कमीशनन किया गया है। यह विश्व में किसी फास्ट रिएक्टर से स्वच्छ हाइड्रोजन के प्रथम सफल उत्पादन को रेखांकित करता है।

3. 10 मई 2026 को भोपाल में 'रेयर अर्थ एवं टाइटेनियम थीम पार्क' का उद्घाटन किया गया, जिसमें रेयर अर्थ (RE) एवं टाइटेनियम धातु उत्पादन, RE

पुनर्चक्रण तथा RE फॉस्फोरस से संबंधित बीएआरसी द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों को प्रारंभिक (Pilot) संयंत्र स्तर पर प्रदर्शित किया गया।

4. ब्रिट ने चुनौतीपूर्ण रिफाइनरी वातावरण के लिए पूर्णतः औद्योगिक श्रेणी के स्वचालित गामा कॉलम स्कैनर का स्वदेशी विकास सफलतापूर्वक पूर्ण किया है।

5. निजी एवं राज्य सरकार के क्षेत्रों में गामा विकिरण प्रसंस्करण सुविधाओं की स्थापना के लिए 06 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए तथा इस अवधि में ऐसी 04 सुविधाओं का कमीशनन किया गया। देश में कुल 43 सुविधाएँ प्रचालनरत हैं, जिन्हें परमाणु ऊर्जा विभाग, कोबाल्ट-60 स्रोतों की आपूर्ति तथा संयंत्र प्रचालन पैरामीटर्स के निर्धारण के माध्यम से सहायता प्रदान करता है।

6. एनएफसी ने भारतीय मोल्टन साल्ट ब्रीडर रिएक्टर टेस्ट लूप के लिए निकल आधारित मिश्रधातु हैस्टलॉय ट्यूब्स का सफलतापूर्वक विकसित किया है। एनएफसी ने SCRF कैविटी के लिए आयात-विकल्प के रूप में हाई RRR नायोबियम का भी स्वदेशी विकास किया है, जो हमारे ADSS और ISNS कार्यक्रमों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

7. आरआरकेट ने 2856 मेगाहर्ट्ज़ क्लाइस्ट्रॉन इलेक्ट्रॉन गन की निर्माण प्रक्रिया को सफलतापूर्वक विकसित किया है तथा देश की प्रथम स्वदेशी इलेक्ट्रॉन गन निर्माण का गौरव प्राप्त किया है।

D. विभाग, मूलभूत एवं निर्देशित अनुसंधान को निरंतर प्रमुखता देता रहा है और हमारे वैज्ञानिक एवं इंजीनियर न केवल कई अग्रणी अनुसंधान क्षेत्रों में परिणाम दे रहे हैं,

बल्कि वैज्ञानिक अनुसंधान व बृहत वैज्ञानिक अवसंरचनाओं के निर्माण संबंधी देश की परिकल्पना की रूपरेखा एवं मार्ग को आकार दे रहे हैं और उसका मार्गदर्शन भी कर रहे हैं।

1. विभाग की मेगा साइंस परियोजनाओं की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में औंध, हिंगोली जिला, महाराष्ट्र में लाइगो इंडिया अब्ज़र्वेटरी की सिविल एवं वैक्यूम अवसंरचना हेतु इंजीनियरिंग, प्रापण एवं निर्माण संविदा दिनांक 5 मार्च 2026 को प्रदान की गई। यह ₹1,600 करोड़ से अधिक लागत की एकल संविदा है, जिसे 48 माह की अवधि में कार्यान्वित किया जाएगा।
2. ईसीआईएल द्वारा विकसित करेक्टर मैग्नेट के फर्स्ट-ऑफ-सीरीज पॉवर कन्वर्टर की FAIR (Facility for Antiproton and Ion Research) को आपूर्ति करने के लिए ऐसे 70 कन्वर्टरों का बृहत स्तर पर उत्पादन किया जा रहा है।

E. विभाग ज्ञान प्रबंधन, क्षमता निर्माण एवं मानव संसाधन विकास की दिशा में समन्वित प्रयास कर रहा है।

1. एचबीएनआई ने NIRF रैंकिंग 2024 में अनुसंधान संस्थान श्रेणी में 7वाँ, विश्वविद्यालय श्रेणी में 12वाँ और समग्र श्रेणी में 20वां स्थान हासिल किया है। एचबीएनआई छात्रों और संकाय सदस्यों द्वारा नेचर ग्रुप ऑफ जर्नल समूह में उच्च गुणवत्ता वाले प्रकाशनों के आधार पर 1 मार्च 2025 से 28 फरवरी 2026 की अवधि हेतु नेचर इंडेक्स 2025 ने एचबीएनआई को पूरे भारत में

भौतिक विज्ञान में प्रकाशनों के संबंध में द्वितीय स्थान पर और सभी विषयों में तृतीय स्थान पर रखा है।

2. वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान, एचबीएनआई ने कुल 964 डिग्रियां प्रदान की हैं, जिनमें Ph.D. की 267 डिग्रियां, M.Tech की 114 डिग्रियां, विभिन्न विषयों में M.Sc. की 242 डिग्रियां, ऑंकोलॉजी में विशेषज्ञता सहित पोस्ट-ग्रेजुएट और सुपर स्पेशियालिटी मेडिकल की 156 डिग्रियां, न्यूक्लियर साइंस और इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर डिप्लोमा की 93 डिग्रियां और रेडियोलॉजिकल फिजिक्स में डिप्लोमा की 29 डिग्रियां शामिल हैं। एचबीएनआई ने अपनी स्थापना के बाद से 31 मार्च 2026 तक 10,191 विद्यार्थियों को उपाधि/डिप्लोमा/प्रमाणपत्र प्रदान किए हैं जिनमें 3,115 Ph.D., 1,803 M.Tech, 916 M.D., 542 D.M../M.Ch, 1,200 समेकित M.Sc., 962 PGD आदि सम्मिलित हैं।

F. विगत एक वर्ष में परमाणु ऊर्जा विभाग परिवार को कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। इन सम्मानों के लिए मैं अपनी खुशी आप सबके साथ बांटना चाहता हूं।

1. एचबीसीएसई-टीआईएफआर द्वारा मार्गदर्शित भारतीय विद्यार्थियों ने वर्ष 2026 में अंतरराष्ट्रीय ओलंपियाडों में 12 स्वर्ण पदक और 7 रजत पदक जीतकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

a. बुकारामंगा, कोलंबिया में आयोजित 56वें अंतर्राष्ट्रीय फिजिक्स ओलंपियाड (IPhO) 2026, में भारतीय दल ने सराहनीय प्रदर्शन किया। टीम के सभी पांच सदस्यों ने स्वर्ण पदक जीते जिससे भारत, चीन, कजाकिस्तान, रूस, दक्षिण कोरिया और ताइवान के साथ संयुक्त रूप से प्रथम स्थान पर रहा।

b. ताशकंद, उज्बेकिस्तान में आयोजित 58वें अंतर्राष्ट्रीय केमिस्ट्री ओलंपियाड (IChO) 2026 में इसी तरह प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय टीम के सभी चार सदस्यों ने स्वर्ण पदक जीते, जो इस प्रतिष्ठित वैश्विक प्रतियोगिता में देश का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

c. शंघाई, चीन में आयोजित 67वें अंतर्राष्ट्रीय मैथमेटिक्स ओलंपियाड (IMO) 2026 में छह प्रतिभागियों की भारतीय टीम ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और 2 स्वर्ण और 4 रजत पदक जीते।

d. विल्नियस, लिथुआनिया में आयोजित 37वें अंतर्राष्ट्रीय बायोलॉजी ओलंपियाड (IBO) 2026 में भारतीय दल ने एक स्वर्ण पदक और तीन रजत पदक अर्जित किए।

2. देश भर के एईईएस स्कूलों के हमारे विद्यार्थियों ने अकादमिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप में एईसीएस कैगा की कक्षा 11 की छात्रा सुश्री अक्षया

साथी ने हाल ही में श्रीलंका में आयोजित कॉमनवेल्थ यूथ चेस चैंपियनशिप 2026 के अंडर-16 बालिका वर्ग में स्वर्ण पदक जीता है।

जहाँ हम अपनी मुख्य गतिविधियों को मजबूत करने पर अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, वहीं डीसीएसईएम, डीपीएस और जीएसओ जैसे हमारे सेवा संगठन विभाग के बुनियादी ढाँचे को संवर्धित कर मजबूती प्रदान करते रहे हैं।

मानव जाति और पर्यावरण पर नाभिकीय ऊर्जा के बहुआयामी लाभकारी प्रभावों के बारे में जागरूकता और सकारात्मक अवधारणा विकसित करने के लिए, परमाणु ऊर्जा विभाग ने अपने आउटरीच कार्यक्रमों को एक अभियान के रूप में जारी रखा है।

मैं, अपने स्वास्थ्य-सेवा कार्मियों, सुरक्षा कर्मियों तथा प्रशासनिक/तकनीकी/वैज्ञानिक कर्मचारियों के समर्पण के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ कि वे न केवल हमें संरक्षित, सुरक्षित एवं स्वस्थ रखते हैं, बल्कि पूरी व्यवस्था को सुचारु रूप से कार्यशील भी बनाए रखते हैं।

अंत में, मैं आप सभी के प्रयासों के लिए एक बार पुनः आपका धन्यवाद करता हूँ और यह आग्रह करता हूँ कि 'राष्ट्र की सेवा में परमाणु' की सच्ची भावना के साथ राष्ट्र सेवा में अपना योगदान निरंतर जारी रखें तथा विकसित भारत के प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने हेतु तत्पर रहें।

जय हिन्द।